Roll No : .....

Total No. of Questions : **12** ] [ Total No. of Printed Pages : **3**

# A–303

## B.A. (Part-III) Examination, 2021

## RAJASTHANI

Paper - I

(प्राचीन राजस्थानी काव्य)

*Time : 1½ Hours*] [*Maximum Marks : **100***

**(सवालां रा जवाब हिन्दी या राजस्थानी में दिया जाय सकै)**

**Section–A** **(Marks : 2 × 10 = 20)**

***Note*** :– Answer all *ten* questions (Answer limit **50** words). Each question carries **2** marks.

**(खण्ड–अ)** **(अंक : 2 × 10 = 20)**

**नोट** :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

**Section–B** **(Marks : 8 × 5 = 40)**

***Note*** :– Answer any *five* questions out of seven (Answer limit **200** words). Each question carries **8** marks.

**(खण्ड–ब)** **(अंक : 8 × 5 = 40)**

**नोट** :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

**Section–C** **(Marks : 20 × 2 = 40)**

***Note*** :– Answer any *two* questions out of four (Answer limit **500** words). Each question carries **20** marks.

**(खण्ड–स)** **(अंक : 20 × 2 = 40)**

**नोट** :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

## खण्ड–अ

2 each

1. सगळा सवालां रा पडूत्तर देवणा है–

(क) 'ढोला-मारू रा दूहा' रै रचनाकार रौ नांव बताओ।

(ख) ढोला-मारू री ब्याव रै बखत कांई उमर ही ?

(ग) ढोला री दोनूं जोड़ायतां रा नांव बताओ।

(घ) गोरा-बादल रौ रतनसेन रै सागै कांई रिस्तो हुवै ?

(ङ) 'गोरा बादल चरित चउपई' रा रचनाकार कुण है ?

(च) अल्लाउद्दीन कठै रौ राजा हो ?

(छ) रतनसेन कुण रौ बेटो हो ?

(ज) 'रस' री परिभाषा देवो।

(झ) 'दूहा' छन्द रौ परिचै देवो।

(ञ) दो प्राचीन राजस्थानी काव्यां रां नांव उणरै रचनाकारां सेती बताओ।

## खण्ड–ब

8 each

**नोट** :– किणी **पाँच** सवालां रा पडूत्तर देवो। (सबद सीमा **200** सबद) हेठै माण्डेड़ी ओळी री परसंग सेती व्याख्या करौ।

2. कागज नहीं क मसि नहीं, लिखतां आळस थाइ।

कह उण देस संदेसड़ा भोलइ बड़ई बिकाइ॥

अकथ कहाणी प्रेम की, किणसूं कही न जाइ।

गूंगा का सुपना भया, सुमर सुमर पिछताइ॥

3. ढ़ाढ़ी जे साहिब मिलइ, यूँ दाखविया जाइ।

आख्यां सीप विकासियां, स्वाति ज बरसउ आइ॥

ढ़ाढ़ी अेक संदेसड़उ, प्रीतम कहिया जाइ।

सा धण बलि कुइला भई, भसम ढ़ंढ़ोलिसी आई॥

4. पंथी अेक संदेसड़उ, कहिज्यउ सात सलाम।

जबथी हम तुम बिछड़े, नयणे नींद हराम॥

प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि।

हियड़ा भीतर प्री बसइ, दा झणती डरपाहिं॥

5. अेक दिवस पदमिणि नइ पासि, राजा बैठउ करइ विलास।

नेह नितंबनि चुंबन करइ, राजा आलिंगन आचरई॥

तिणि प्रस्तावइं राघव व्यास, पुहतु पदमिणी तणइ अवासि।

ते देखी राजा खुणसीउ, राघव ऊपरि कोप ज कीउ॥

6. 'गोरा बादिल चरित चउपई' रौ कथानक आपरै सबदां म माण्ड'र लिखो।

7. 'ढोला-मारू रा दूहा' रौ काव्य सौन्दर्य उदाहरणां सेती समझाओ।

8. 'पदमिणी' रै चरित्र री सगळी विसेसतावां बताओ।

**खण्ड–स** 20 each

9. 'ढोला-मारू रा दूहा' की मारवणी रै विरह रौ बखाव करौ ?

10. "गोरा बादिल चरित चउपई" अेक अेतिहासिक चरित काव्य है। इस बात रौ खुलासौ ओपता दाखलावां रै साथै करौ।

11. प्राचीन राजस्थानी काव्य रौ विकास समझाओ।

12. राजस्थानी काव्य दोषां रौ खुलासौ उदाहरणां रै साथै करौ।